POVERTY (गरीबी) ①

अर्थ:-

साधारण शब्दों में गरीबी वह सामाजिक और आर्थिक स्थिति है जिसमें कोई व्यक्ति अपनी मूलभूत आवश्यकताओं को भी पूरा नहीं कर पाता है।

वर्तमान समय में गरीबी की विस्तृत परिभाषाओं पर अत्यधिक जोर दिया जा रहा है। उदा. के लिए प्रो. अमर्त्य सेन के अनुसार 'गरीबी क्षमताओं का अभाव है' (Lack of capabilities). उनकी इस अवधारणा को 'वास्तविक गरीबी' (Real poverty) कहा जाता है। उनके अनुसार केवल आय हस्तांतरण से गरीबी को दूर नहीं किया जा सकता है। आय मात्र उपकरण है।

इस बात में दोराय नहीं है कि गरीबी को दूर करने में आय की महत्वपूर्ण भूमिका होती है लेकिन यह बात ध्यान में रखना जरूरी है कि आय के माध्यम से लोगों की क्षमताओं में बढ़ोतरी हो। आय का क्षमताओं में परिवर्तन न केवल विभिन्न शर्तों पर निर्भर करता है (जैसे कि व्यक्ति विवेकशील है, समाज प्रगतिशील है आदि) बल्कि वह विभिन्न प्रकार के आकस्मिक कारकों (जैसे कि प्राकृतिक विपदाएँ) पर भी निर्भर करता है। यही कारण है कि प्रो. अमर्त्य सेन भारत सरकार की DBT (Direct Benefit Transfer) योजना की आलोचना करते हैं।

वर्ष 2010 में UNDP द्वारा एक बहुआयामी निर्धनता सूचकांक (MPI - multi Dimension poverty Index) का निर्माण किया गया जिसमें शिक्षा, स्वास्थ्य और जीवन स्तर से जुड़े हुए दस मानकों के आधार पर निर्धनों की पहचान की जाती है।

हाल ही में MGI - mckensey Global Institute (mumbai) द्वारा 'Empowerment line' की अवधारणा दी गई जिसमें आठ मानकों का प्रयोग किया गया है।

Institute of Economic Growth के अर्थशास्त्री आशीष बोस द्वारा भी निर्धनता का पता लगाने के लिए पांच मानकों का प्रयोग करते हुए एक सूचकांक का निर्माण किया गया जिसे HMI (Household misery Index) कहा जाता है।

स्पष्ट है कि वर्तमान समय में गरीबी के बहुआयामी अर्थ को प्राथमिकता दी जा रही है।

गरीबी के प्रकार :-

गरीबी के तीन मुख्य प्रकारों की चर्चा की जाती है—

1) निरपेक्ष अथवा परम् गरीबी (Absolute Poverty)
2) सापेक्षिक गरीबी (Relative Poverty)
3) मानवीय (Human Poverty)

निरपेक्ष अथवा परम् गरीबी के अन्तर्गत संबंधित व्यक्ति ऊर्जा की आवश्यकताओं को भी पूरा नहीं कर पाता है।

मानवीय गरीबी की स्थिति में एक उपयुक्त मानव जीवन से जुड़ी हुई मूल भूत आवश्यकताओं को ध्यान में रखा जाता है। ऊर्जा के अलावा शिक्षा, स्वास्थ्य इत्यादि पर भी ध्यान दिया जाता है। यहाँ पर आवश्यकताओं के दायरे को थोड़ा विस्तृत कर दिया जाता है और सन्दर्भ बिन्दु के रूप में एक उपयुक्त मानव जीवन को लिया जाता है।

सापेक्षिक गरीबी में लोगों के जीवन स्तर में अन्तर को देखा जाता है। इसके लिए उच्च आय समूह के जीवन स्तर की तुलना निम्न आय समूह के जीवन स्तर से की जाती है यदि उसमें अन्तर है तो कहा जाएगा की सापेक्षिक गरीबी है
उदा० - वर्ष 2011-12 में भारत के ग्रामीण क्षेत्रों के Top 10% लोगों का MPCE (monthly Per Capita Expenditure) Bottom 10% लोगों के MPCE से 6.9 गुना अधिक पाया गया।

(NSSO - 68th Round on consumption)। वर्ष 2009-10 में यह अन्तर 5.8 गुना का था।

किसी भी व्यवहारिक समाज में सभी लोगों के जीवन स्तर एक समान नहीं हो सकते लेकिन उन्हे कम जरूर किया जा सकता है। कभी-2 सापेक्षिक गरीबी निरपेक्ष गरीबी का कारण बन जाती है। यह अत्याधिक भयावह स्थिति का परिचायक है। सामाजिक बहिष्करण (Social Exclusion) के डर से यह स्थिति पैदा होती है।

Qu गरीबी का अर्थ बताइए? क्या यह कहना सही होगा कि गरीबी बहुआयामी होती है?

Qu प्रो॰ अमर्त्य सेन की गरीबी की अवधारणा बताइए। नीति निर्माताओं के लिए उनका क्या संदेश है?

Qu सापेक्षिक गरीबी किसे कहते हैं? क्या यह निरपेक्ष गरीबी का एक कारण बन सकती है?

Qu भारत सरकार की DBT योजना से आप क्या समझते हैं? संसाधनों के कुशल उपयोग को सुनिश्चित करने की क्षमता के बावजूद प्रो॰ अमर्त्य सेन और अन्य सामाजिक विचारक इसकी किस आधार पर आलोचना करते हैं?

—·—

~~भारत~~

भारत में गरीबी का मापन :-

Monthly Per Capita Expenditure (MPCA)

भारत में गरीबी को मापने की NSSO, HCR (Head Count Ratio - शीर्ष गणना अनुपात) विधि का प्रयोग करता है। इस विधि से गरीबी के अनुमान लगाए जाते है।

इस विधि के अन्तर्गत ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में MPCE के निर्णायक स्तर निकाले जाते है। चुने गए परिवारों के वास्तविक MPCE को निर्णायक MPCE के साथ तुलना की जाती है। यदि वास्तविक MPCE कम है तो उसे निर्धन माना जाता है।

वर्ष 2011-12 के लिए भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में औसत रूप से निर्णायक MPCE 816 रु० माना गया है जबकि शहरों के लिए यह 1000 रु० है।

उपर्युक्त विधि के आधार पर निर्धनों की संख्या का पता लगाया जाता है और कुल जनसंख्या के प्रतिशत के रूप में अभिव्यक्त कर दिया जाता है इसे HCR कहते है सरलम रूप से —

$$HCR = \frac{\text{निर्धनों की संख्या}}{\text{जनसंख्या}} \times 100$$

भारत में गरीबी को मापने की विधि की आलोचना विभिन्न आधारों पर की जाती है। जैसे कि भारत में लोगों के खर्च को देखा जाता है (उपभोग)। लेकिन अधिकांश लोगों के अनुसार आय विधि अधिक उपयुक्त है। उदा०- विश्व बैंक उस व्यक्ति को निर्धन मानता है जो एक दिन में $1.25 से कम आय प्राप्त करता है।

भारत के HCR से इस बात का तो पता लगता है कि निर्धनता जनसंख्या के कितने भाग पर व्यापक है लेकिन उसके घनत्व का पता नही लगता है। अर्थात लोग गरीबी रेखा से कितने दूर है।

इसके लिए भारत PGR (Poverty Gap Ratio) जैसी विधियों का प्रयोग कर सकता है। PGR, निर्धन लोगों के गरीबी की रेखा से औसत विचलन को गरीबी की रेखा के प्रतिशत के रूप में प्रदर्शित करता है।

यह भी कहा जाता है कि भारत में गरीबी के आकलन में गरीबों के मध्य पायी जाने वाली आय की विषमताओं पर कोई ध्यान नही दिया गया है। निर्धनों में निर्धन स्थिति का पता HCR से नही लगता है इस सन्दर्भ में भारत SPGR (Squared PGR) जैसे विधियों का प्रयोग कर सकता है।

निर्धनों में आय विषमता SPGR से

<u>तेन्दुलकर विशेषज्ञ दल द्वारा भारत में गरीबी विधि मे बदलाव के लिए दिए गए सुझाव :-</u>

1) ऊर्जा की आवश्यकताओं के साथ-2 शिक्षा और स्वास्थ्य से जुड़ी हुई आवश्यकताओं को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए। इस सन्दर्भ में ऊर्जा से जुड़े खर्च में शिक्षा और स्वास्थ्य से जुड़े न्यूनतम जरूरी खर्चे को जोड़ा जाना चाहिए (Augmentation of Poverty line).

2) शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी के मानकों मे कोई अन्तर नही होगा और एक ही PLB (Poverty ~~Labour~~ Level Basket) का प्रयोग किया जाएगा। हालांकि मौद्रिक अन्तर बने रह सकते है।

3) गरीबी के आकड़ों का संग्रहण करते समय MRP (Mixed Recall/Reference Period) विधि का प्रयोग होना चाहिए।

इस सन्दर्भ में खाद्य वस्तुओं के मामले मे 30 दिन और शिक्षा और स्वास्थ्य के मामले में 365 दिन की स्मरण/सन्दर्भ अवधि का प्रयोग किया जाना चाहिए।

<u>नोट</u> :- योजना आयोग द्वारा इन सभी बदलावों को मान लिया गया लेकिन ~~~~ भारत में गरीबी के अनुमानों से जुड़े हुए विवादों के मध्य नजर सी. रंगराजन की अध्यक्षता में पुनः एक विशेषज्ञ दल की नियुक्ति की गई

यह दल तेंदुलकर समीति द्वारा सुझाए गए विधियों में संशोधन कर सकता है।

Poverty Estimates in India :-

	Poverty Ratios (%)		
	Rural	Urban	All India
1993-94	50.1	31.8	45.3
2004-05	41.8	25.7	37.2
2011-12	25.7	13.7	21.9

Source : Planing Commission
Method : Tendulkar.

Trickle-down & Poverty & In India

Top to Bottom = Infiltration

कुछ लोगों के अनुसार गरीबी एक स्वतंत्र समस्या नहीं है। गरीबी अर्थव्यवस्था में आर्थिक विकास के कम होने के कारण उत्पन्न होती है। ऐसी स्थिति में यदि समग्र आर्थिक विकास को बढ़ाने वाली नीतियों का प्रयोग किया जाय तो उसका लाभ निर्धन लोगों तक भी पहुचेगा। (Trickle down or top to Bottom) और उन्हे रोजगार और आय के अवसर प्राप्त होंगे। इस प्रकार वे अपने मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा कर पाएंगे।

भारत में Trickle down को प्रभावी नहीं माना गया है। भारत के ~~वर्तमान~~ पी. चिदम्बरम राष्ट्रपति के द्वारा भी इस बात को कहा गया कि भारत में समग्र आर्थिक विकास को बढ़ावा देने वाले नीतियाँ, गरीबी को कम करने में अपेक्षित भूमिका का निर्वहन नहीं कर पा रही है। यह ध्यान देने योग्य है कि Trickle down के अन्तर्गत ऐसे उपायों को अपनाया जाता है जो देश के औद्योगिकरण आदि को बढ़ावा देते हैं जैसे-उदारीकरण की नीति को लागू करना, ब्याज दरों को नीचे रखना; करों में छूटें देना, धन का आर्थिक विस्तार करना। न कि केवल भारत में ही बल्कि अमेरिका में भी गरीबी को कम करने में इनकी प्रासंगिकता पर प्रश्न चिन्ह लगाया गया है। Oxfam द्वारा किये गए एक अध्ययन में बताया गया है कि वर्ष 2008-09 में अमेरिकन संकट की पृष्ठभूमि में अमेरिका में प्रयुक्त किये गए उपर्युक्त वर्णित उपायों के कुल आय का 95% हिस्सा अमेरिका के सर्वाधिक सम्पतिवार 1% लोगों में गया।

भारत में समकालिक समय में Trickle down की विफलता के पीछे निम्न मुख्य कारणों को उत्तरदायी माना जा सकता है —

1) कृषि पर अपेक्षित ध्यान नहीं देना। यह देखा गया है कि कृषि में सार्वजनिक निवेश लगातार कम हो गया है, इसने निजी निवेशको को प्रभावित किया है। (दोनों के मध्य पूरकता का संबंध होता है) इससे कृषि उत्पादकता में गिरावट आयी।

2) और कृषि गति विधियों (Non-forming Activities) पर आपेक्षित ध्यान नहीं दिया गया। उदारीकरण के नीतियों के साथ ग्रामीणौद्योगिकीकरण पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

3) भारत में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योगों के विकास की उपर्युक्त नीतियों का अनुसरण नही किया।
भारत में इन उद्योगों को सस्ते विदेशी आयातों और बडे उद्योगों के उत्पादों से प्रतियोगिता का सामना करना पड़ा है। भारत सरकार द्वारा इन उद्योगों के लिए आरक्षित वस्तुओं को लगातार कम किया गया। वर्तमान में लगभग 20 वस्तुएँ इनके लिए आरक्षित है, अधिकांश सूक्ष्म, लघु उद्योग रुग्ण हो गये या उन्हे बन्द होना पड़ा, जबकि ये उद्योग विकेन्द्रित विकास को सुनिश्चित करते है।

4) भारत में आर्थिक उदारीकरण के लागू होने के बाद ब्याज दरों को कम किया गया है। इसके अलावा विदेशी निवेश के उदारीकरण तथा घरेलू वित्त बाजार में सुधार के द्वारा पूँजी की मात्रा को बढाया गया है।

सस्ती एवं अधिक मात्रा में उपलब्ध पूंजी ने श्रम के विस्थापन को बढावा दिया है।

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि भारत में Trickle down ठीक से काम नही कर पा रहा है। मैके-जी द्वारा जारी की गई एक रिपोर्ट में यह कहा गया है कि भारत में लगभग 56% परिवार Empowerment line से नीचे है।

इसी प्रकार UNDP के अनुसार भारत के 53.4% परिवार बहुआयामी निर्धनता से पीडित है। यही कारण है कि भारत में समावेशी विकास एक ज्वलन्त मुद्दा बना हुआ है।

भारतीय गरीबी पर मैकेन्जी का अध्ययन :-

हाल ही में MGI (Maikinjee Global Institute, Mumbai) द्वारा भारतीय गरीबी पर एक महत्वपूर्ण अध्ययन किया गया। इसकी मुख्य बातें निम्न प्रकार है —

1) Empowerment Line की अवधारणा :-

गरीबी रेखा के निर्धारण में यह बात ध्यान में रखी जानी चाहिए कि निर्धन सशक्तीकरण को महसूस करें। इस सन्दर्भ में उन्हे निम्न तीन बातों का महसूस होना चाहिए —

i) आर्थिक सुरक्षा (Economic Security)
ii) अवसर (opportunity)
iii) सम्मान (Dignity)

MGI के अनुसार इस तरह का भाव विकसित करने के लिए निर्धन लोगों का उपभोग का स्तर इस प्रकार हो कि उनकी निम्न 8 प्रकार की मूलभूत आवश्यकताएँ पूरी हो जाती हो —

i) Food
ii) Housing
iii) Electricity
iv) Drinking water
v) Sanitation (स्वच्छता)
vi) Healthcare
vii) Education
viii) समाजिक सुरक्षा (Social Security)

नोट :- MGI के अनुसार Empowerment line के लिए MPCE (monthly per capital expenditure) ₹ 1330/- प्रति रखा जाना चाहिए। यह officially poverty line से काफी ऊपर है।

Empowerment line के अनुसार भारत में गरीबी का स्तर -

NSS के अनुसार Empowerment को ध्यान में रखते हुए वर्ष 2011-12 के लिए भारत की जनसंख्या (600 million) निर्धन है जबकि official poverty line के अनुसार यह 21.9 %. (270 million) है।

2) Future Projections :-

यदि भारत वर्तमान कमजोर आर्थिक निष्पादन के साथ आगे बढ़ता है और कोई बड़े आर्थिक सुधार नहीं करता है तो 2022 तक भारत की 1/3 से भी अधिक जनसंख्या Empowerment line के नीचे रहेगी, लगभग 12% जनसंख्या official Line के नीचे रहेगी।

3) Four Key Priorities :- inclusive Reforms

i) Accelerating Job Creation :- 115 million jobs (10 वर्षों में)

↓

To Promote

- Manufactoring
- Construction
- Labour intensive service-sector

लेकिन इसके लिए चार निम्न बातों पर ध्यान देना होगा —

↓

- Reduction in Administration burden on bussiness
- Infrastructure
- Labour market Reforms
- Vocational Training to the poor & uneducated

(11)

ii) Raising Farm Productivity :-

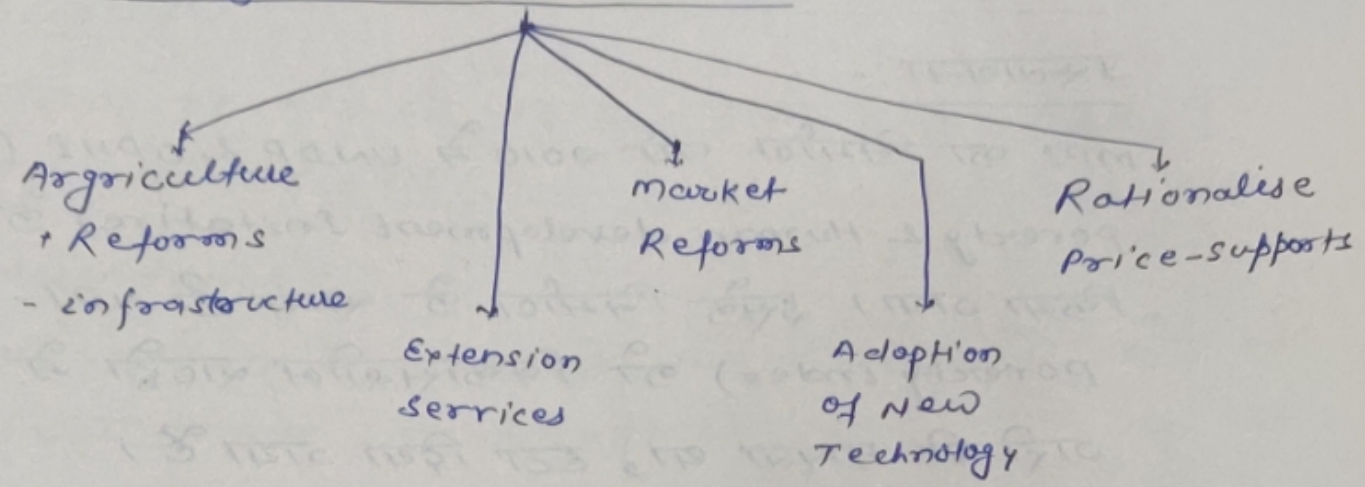

iii) Increasing Public spending on Basic services :-

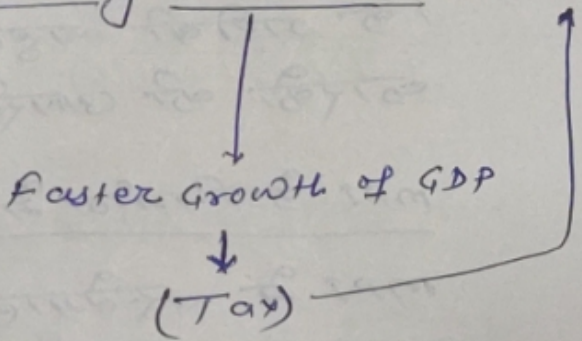

iv) making Basic services more effective

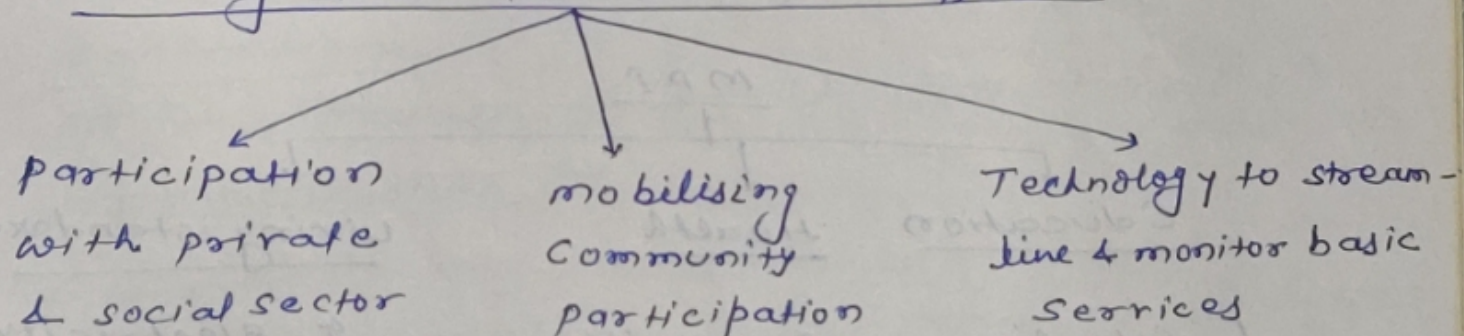

Note:-

MGI के अनुसार यदि इन सभी सुधारों को लागू किया जाता है तो भारत में 2022 तक 7 % जनसंख्या Empowerment line के नीचे तथा 1 % जनसंख्या official poverty line के नीचे रहेगी।

MPI (multidimensional Poverty Index):-

प्रस्तावना :-

MPI का निर्माण वर्ष 2010 में UNDP & OPHI (Oxford poverty & Human development Initative) के द्वारा किया गया। इसके निर्माण के साथ ही HPI-1 (Human poverty index) को विकासशील राष्ट्रों में मानवीय गरीबी मापता था, हटा दिया गया है।

MPI इस बात को प्रदर्शित करता है कि गरीबी बहुआयामी होती है और विभिन्न कारकों की आपसी अंतः क्रिया के परिणाम होती है।

MPI के निर्माण में प्रयुक्त होने वाले कारक :-

MPI में इस्तेमाल होने वाले विभिन्न कारकों को निम्न तरिकें से दिखाया गया है —

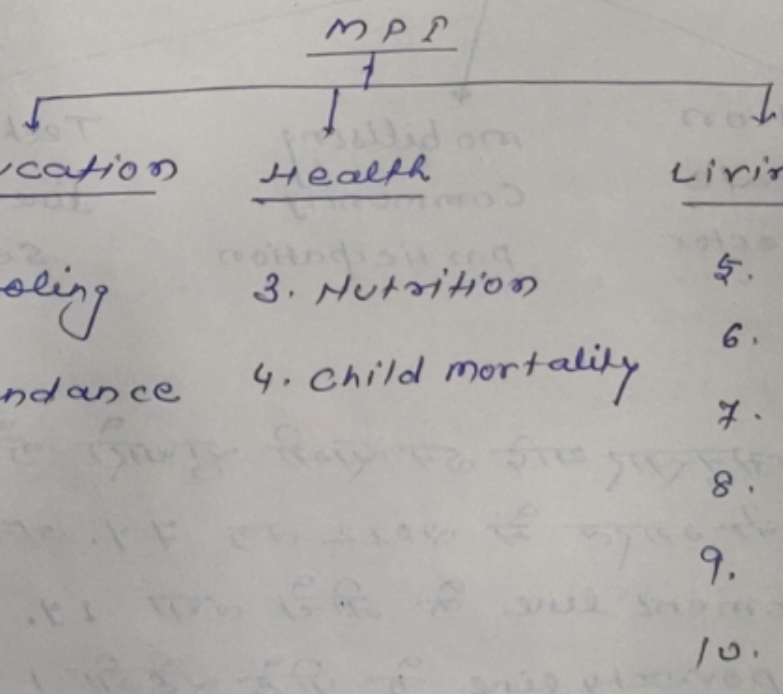

पंचनामों का पता कैसे लगाया जाता है → Deprivation के.

1. Schooling:-
परिवार का कोई भी सदस्य स्कूली शिक्षा के 5 वर्ष पूरा नही कर पाया।

2. Attendance:-
यदि परिवार में School मे जाने वाले उम्र में कोई भी बच्चा स्कूल नही जा रहा है।

3. Nutrition:-
परिवार में कोई भी कुपोषण से ग्रसित हो।

4. Child Mortality:-
परिवार में किसी बच्चे की मृत्यु हो गयी है।

5. Electricity:-
घर में विद्युत का कोई कनेक्शन नही है।

6. Sanitation:-
घर में पर्याप्त सफाई नही है अथवा Toilet को शेयर किया जाता है।

7. Floor:-
धूल युक्त आंगन / गोबर से लिपा हुआ आंगन / गंदगी युक्त आंगन

8. Drinking water:-
पीने का पानी घर से 30 मिनट की दूरी या उससे अधिक पर है

9. Cooking Fuel:-
लकड़ी अथवा कोयले, उपले से भोजन पकाया जाता है।

10. Assets:-
निम्न वस्तुओं में कम से कम दो वस्तुओं का नही होना
- रेडियो, T.V, Telephone, Bike और रेफ्रिजरेटर आदि

अथवा

निम्न में किसी एक का नही होना —
कार और ट्रक।

कौन से परिवार को वंचित परिवार कहा जाता है ?

यदि कोई भी परिवार उपयुर्क्त वर्णित सूचकांकों के एक तिहाई भारित भाग के लिए वंचित पाये जाते हैं तो उन्हे गरीबी की दृष्टि से वंचित परिवार माना जाता है और उन्हे निर्धन कहा जाता है।

भारत और MPI

उपर्युक्त वर्णित विधि में भारत के लिए वर्ष 2011 में 53.4% परिवार निर्धन परिवार माने गये हैं।